Date :
Page No.:

NAME - ARCHANA UPPADHAYA

ROLLNO - SKT/16/10

PAPER NAME - ACTING AND
SCRIPT WRITING

PAPER CODE - 12133901

YEAR - IInd

भूमिका विभाजन के अन्तर्गत आने वाले अनुरूपा विरूपा एवं रूपानुसारिणी का वर्णन करे।

रंगमंच पर पात्रो द्वारा काव्य मे वर्णित व्यक्ति का अनुकरण भूमिका कह लाती है
कौन सी भूमिका कौन सा नाटक का पात्र करेगा यह निर्देशक के लिए भी कठिन कार्य होता है। क्योंकि भूमिका का वहन करने वाला पात्र ही काव्य मे वर्णित राम आदि के चित्रण को जीवन्त कर देता है

क्योंकि बहुत सारी जगह देखा जाता है पात्र कुछ क्षण के लिए ही रंगमंच पर आता है और ऐसा अभिनय करता है कि वह मुख्य पात्र से भी ज्यादा प्रशंसा प्राप्त करता है। यह पात्र पर निरभर करता है, कि उसने कैसी भूमिका निभाई है।

आका

प्रकृति के अनुसार ही पात्रों
को भूमिका दी जाती है।
उनकी कद काठी, रूप, रंग,
हाव भाव आदि को देखकर
ही उनको भूमिका प्रदान करती
है तदनुसार वैसे ही वस्त्र
दिए जाते हैं वैसा ही
साज शृंगार किया जाता है।
जिससे कि पात्र हू-ब-हू
काव्य मे वर्णित चरित्र को
प्रस्तुत कर सके।

इसके के विषय मे महामुनी
महाराज भरत ने अपने ग्रन्थ
नाट्यशास्त्र मे संक्षिप्त मे वर्णन
किया है कि किस - पात्र को
कौन सी भूमिका दी जाए।

इसी मे महाराज मुनी ने
3 प्रकार की भूमिका का
वर्णन किया है।

अनुरूपा :- नाटक करने वाले पात्रों
को देखकर उसी के
जैसे अर्थात उसी से साम्य रखने
वाले काव्य पात्र की भूमिका

दी जाती है। स्त्री को स्त्री, पुरुष को पुरुष पात्र की भूमिका कद काठी इत्यादि को देखकर भूमिका दी जाती है।
— जैसे किसी योद्धा की भूमिका ऐसे ही पात्र को दी जाती है जो लम्बा चौडा हो। सीता की भामिका भी ऐसी लडकी को दी जाती है। जो दिखने मे मासूम, सुन्दर प्रतीत हो।

आज के समय मे हम देखते है। कि आज-कल जीवनी बनाने का दौर चल रहा है ऐसे व्यक्ति कि जीवनी बनती है जो जीवत है। उसमे ही एक उदाहरण M.S धोनी का भी है। जिसमे महेन्द्र धोनी से साम्य रखने वाले लम्बे चौडे सुशान्त सिंह को उनकी भूमिका दी गयी थी। वर्तमान समय मे इसे स्क्रीनिंग टेस्ट भी कहते है। जो पात्र कहानी भी दिखगए। पात्र से साम्य रखता है। उसी को वह भूमिका दी जाए उसे अनुरूप।

कहा जाता है। अर्थात् काव्य, कहानी या नाटक मे व्यक्ति का या पात्र का वर्णन जिस प्रकार होता है उसी प्रकार के व्यक्ति को वह भूमिका दी जाती है।

विरूपा :- जैसा कि इसके नाम से ही ज्ञात हो जाता है। विरूपा "अर्थात् रूप के विपरीत" जो जैसा है उसके विपरीत उसे भूमिका दी जाए - बूढे की भूमिका बच्चे को दी जाए। सुन्दर की भूमिका किसी समान्य सा दिखने वाले व्यक्ति को दी जाए तो वह विरूपा कहलाती है।

जैसे कि अभिज्ञान शाकुन्तलम् मे वर्णित सुन्दर स्त्री शाकुन्तला का वर्णन किसी कुरूप स्त्री को दे दिया जाए।

इस प्रकार की भूमिका को महाराज मनु निषेध करते है क्योंकि चाहे कितना भी प्रयत्न कराया जाए परन्तु, एक वृद्ध पर बच्चे का अनुकरण पुर्णता नही कराया जा सकता।

बहुत सारे चित्रपट मे देखा भी गया है। कि एक वृद्ध को नव युवक का रोल दिया गया। परन्तु वह किरदार, नायक और नायिका का देखने वाले दर्शको के बीच मे अच्छा नही लगता। ऐसी बहुत सारे चलचित्र दक्षिण भारत मे भी बानाए जाते है। जिसमे देखकर हा पता चल जाता है कि नायक की भूमिका का चयन विरूपा के अनुसार किया गया है।

प्रसागिक उदाहरण : बालीवुड का चलचित्र "पुलिस वाला गुडा" जिसमे नायक की

भूमिका संजयदत्त द्वारा निभाई गयी है। जो संजय दत्त से साम्य नही रखती। ऐसे अभिनय करने वाले पात्र दर्शकों के हृदय तक नही पहुंच पाते है।

रूपानुसारिणी : जब पात्र विशेष कौशल के कारण स्त्री पुरुष का और पुरुष स्त्री के रूप का अनुकरण कर ले उसे रूपानुसारिणी कहते है।

समान्य शब्दो मे कहे तो जब भी कोई पतला, मधुर स्वर मनुष्य किसी लड़की का अभिनय करे अथवा भूमिका निभाए उसी जैसे वस्त्र धारण करे। उसी के जैसे चले, खाए तो वह रूपानुसारिणी कही जाती है।

समान्यत: रूपानुसारिणी भूमिका का वहन जब किया जाता है। जब पात्रों का अभाव हो।

Date :
Page No.:

जैसे की किसी महिला विधालय मे कोई रंगमच पर अभिनय किया जाए उस पटकथा मे पुरुष भी हो। तो उसमे पुरुष की भूमिका महिला द्वारा कि जाती है।

इसमे चयन के लिए ऐसी लड़की को देखा जाता है जो छोटे बाल रखने वाली हो अथवा लम्बी हो एव बहुत मधुर स्वर की या हो।

रुपानुसारिणी बहुत हद तक काफी ठीक मानी जाती है विरुपा से। और इसका प्रयोग अभाव के कारण अथवा परिस्थीति को देखकर किया जाता है। आज भी। बहुत सारी रासलीला मे द्रौपदी का किरदार पुरुष द्वारा ही किया जाता है।

एंव शुँपनखा का किरदार भी पुरुष द्वारा

ही किया जाता है। हास्य मे ही सखी महिला का स्वभाव कोमल होने के कारण ऐसे अभिनय पुरुष ही करते हैं।

अर्जुन के द्वारा महाभारत मे बहनला का किरदार भी एक रूपानुसारिणी का उदाहरण है।

एक अन्य उदाहरण भी महाभारत मे मिलता है। जब पितामाह भीष्म, सध्या मे बैठे होते है तो द्रौपदी एव कृष्णा भी महिला की रूप धर कर पितामह से वचन दिलवाने जाते है।

एव साम का स्त्री रूप धर कर ऋषि के समक्ष उनका अपमान आदि। इसका उदाहरण है इसके फल स्वरूप उन्हे मुसल को जन्म देने का श्राप प्राप्त होता है।

प्रंसागिक समय मे भी रूपानुसारिणी प्राप्त होती है।

अनुरूपा को सात्विक अभिनय के अन्तर्गत माना जाता है। जबकि रूपानुसारिणी अभाव एवं परिस्थीति का प्रचायक होता है।

HarshaKumari